रचा नया इतिहास

(बाल दोहावली)

● सत्यवीर नाहड़िया

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
335 देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250001

इस पुस्तक का कोई भी अंश, लेखक की पूर्वानुमति के
बिना प्रयोग निषेध है।

ISBN	:	"978-81-946288-9-7"
सर्वाधिकार ©	:	सत्यवीर नाहड़िया
मूल्य	:	₹100/-
प्रथम संस्करण	:	जुलाई, 2020
प्रकाशक	:	समदर्शी प्रकाशन, 335, देवनगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-25001 मोबाइल नंः 9599323508 Website: www.samdarshiprakashan.com Email: samdarshi.prakashan@gmail.com
आवरण एवं सज्जा	:	योगेश समदर्शी
मुद्रक	:	थॉमसन प्रेस

Racha Naya Itihaas Poems By- Satyavir Naharia Rs. 100/-

मेरे सुख-दुख की मीत,
मेरी सहधर्मिणी गीत
(श्रीमती गीता) के बहुआयामी
त्याग एवं सहयोग
को सप्रेम...

अनुक्रम

बच्चों के लिए संजीवनी बूटी जैसी...	7
जिनके दम से इतिहास सुनहरा है...	10
इतिहास रचने वाले साधक	12
योगेश्वर श्रीकृष्ण	13
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	14
महर्षि वाल्मीकि	15
भगवान परशुराम	16
संत रविदास	17
गुरु नानकदेव	18
भगवान महावीर स्वामी	19
महात्मा बुद्ध	20
मीराबाई	21
गुरु गोबिंद सिंह	22
बाबा तुलसीदास	23
संत सूरदास	24
संत कवि कबीर	25
महाराजा अग्रसेन	26
महाराणा प्रताप	27
छत्रपति शिवाजी	28
हेमचंद्र विक्रमादित्य 'हेमू'	29
स्वामी विवेकानंद	30
राव तुलाराम	31
नेताजी सुभाष चंद्र बोस	32
राव गोपालदेव	33
राजा राममोहन राय	34
महात्मा गाँधी	35
लाला लाजपतराय	36
स्वामी दयानंद सरस्वती	37
वीर सावरकर	38
स्वामी रामकृष्ण परमहंस	39
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर	40
लाल बहादुर शास्त्री	41
शहीद भगतसिंह	42

शहीद राजगुरु	43
शहीद सुखदेव	44
शहीद अशफ़ाक़ उल्ला खां	45
पं. रामप्रसाद बिस्मिल	46
महामना मदनमोहन मालवीय	47
आचार्य विनोबा भावे	48
सरदार वल्लभ भाई पटेल	49
महात्मा ज्योतिबा फुले	50
शहीद उधमसिंह	51
पं. जवाहर लाल नेहरू	52
बाल गंगाधर तिलक	53
सर्वपल्ली राधाकृष्णन	54
बाबू बालमुकुंद गुप्त	55
रबींद्रनाथ टैगोर	56
महादेवी वर्मा	57
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	58
जयशंकर प्रसाद	59
सुमित्रानंदन पंत	60
सुभद्रा कुमारी चौहान	61
मैथिलीशरण गुप्त	62
रामधारी सिंह दिनकर	63
मुंशी प्रेमचंद	64
डॉ. हरिवंशराय बच्चन	65
मेजर ध्यानचंद	66
सचिन रमेश तेंदुलकर	67
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	68
डॉ श्रीनिवास रामानुजन	69
डॉ. सी.वी. रमन	70
जगदीश चंद्र वसु	71
हरगोबिंद सिंह खुराना	72
कल्पना चावला	73
मदर टेरेसा	74

बच्चों के लिए संजीवनी बूटी जैसी एक कृति 'रचा नया इतिहास'

आदिकाल से हिंदी साहित्य में दोहों का सृजन होता आया है, जो अपनी संक्षिप्तता एवं मारकता के कारण सुधी पाठकों में काफी लोकप्रिय हुए हैं। तभी तो कविवर बिहारीलाल के दोहों के विषय में यह उक्ति प्रचलित है:-

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

लेकिन हिंदी बाल साहित्य में दोहे कम ही लिखे गए हैं, जबकि शिशुगीत, बालगीत, पहेलियाँ, पद्यकथाएँ, लोरियाँ आदि तो खूब उपलब्ध हैं।

कवि सत्यवीर नाहड़िया हिंदी एवं हरियाणवी भाषा के एक ऐसे रचनाकार हैं, जिनकी रागनी, दोहा कुंडलिया, आल्हा, मुक्तक आदि विधाओं में नौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'रचा नया इतिहास' सत्यवीर नाहड़िया की नवीनत्तम बाल कृति है, जिसमें बेहद रोचक दोहों का समावेश है। ये दोहे 61 प्रमुख सेवियों, योद्धाओं, देशभक्तों, सेनानियों, राजनेताओं, खिलाड़ियों, वैज्ञानिकों आदि के जीवन पर केंद्रित हैं।

भारतवर्ष राम और कृष्ण का देश है। इन्हें हम अपना भगवान मानते हैं। जहाँ एक ओर भगवान कृष्ण सोलह कला परिपूर्ण हैं, वहीं दूसरी ओर भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं। श्रीकृष्ण और राम पर दो दोहे देखिए-

किशन-कन्हैया श्याम जी, वासुदेव गोपाल।
लीला खास कमाल की, जीव-जगत की ढाल।।
आज्ञाकारी पूत थे, किए न पिता निराश।
चौदह वर्षों का लिया, हँसकर था वनवास।।

भगवान महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, गुरु गोबिंद सिंह जैसे गुरुओं ने सदैव मानवता की भलाई के लिए ही कार्य किए हैं। भगवान महावीर स्वामी के जीवन दर्शन को रेखांकित करता हुआ एक दोहा देखिए-

अति संचय दुख खान है, करना सीखो दान।
असली सुख मन को मिले, महावीर का ज्ञान।।

अनेक संत-कवियों ने हमारी साहित्य संपदा को समृद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। मीराबाई, तुलसीदास, सूरदास, कबीर और महर्षि वाल्मीकि इनमें प्रमुख हैं। संत सूरदास के विषय में कहा गया एक दोहा है-

मन की आँखों से रचा, एक अमर इतिहास।
लीला खुद भगवान की, आयी जग को रास।।

हमारे देश में महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस जैसी विभूतियों ने जन्म लेकर रत्न-प्रसविनी धरा को धन्य कर दिया है। स्वामी विवेकानंद के लिए कहा गया एक दोहा प्रस्तुत है-

भाई-बहनों से किया, संबोधन वो खास।
झूम शिकागो था गया, जगी नयी इक आस।।

देश की माटी में महाराजा अग्रसेन, मदर टेरेसा, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, आचार्य विनोबा भावे जैसी सहृदयी शख़्सियतें भी जन्मी हैं, जिनके उत्कृष्ट कार्यों से समाज को सही दिशा मिली है। आचार्य विनोबा भावे से संबंधित दोहा दृष्टव्य है-

धन्य विनोबा भाव वो, नयी जगायी आस।
भूदानी पहचान से, रचा एक इतिहास।।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस, राजा राममोहन राय, हेमचंद्र विक्रमादित्य 'हेमू', राव तुलाराम, राव गोपालदेव, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर, शहीद भगतसिंह, शहीद राजगुरु, शहीद सुखदेव, शहीद अशफाक उल्ला खां, पं. रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों और योद्धाओं ने अपना पूरा जीवन मातृभूमि पर न्योछावर कर दिया है। लाला लाजपतराय के विषय में एक दोहा है-

लाल-बाल अरु पाल की, तिकड़ी का था दौर।
सेठ लाजपत राय जी, थे उनके सिरमौर।।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि ने देश की स्वतंत्रता तथा राजनीति में विशेष योगदान प्रदान किया है। महात्मा गाँधी पर केंद्रित दोहा देखिए-

'भारत छोड़ो' से किया, एक बड़ा ऐलान।

जागी सोयी आत्मा, जागा हिंदुस्तान।।

कहा गया है- 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पर पहुँचे कवि' बाबू बालमुकुंद गुप्त, रबींद्रनाथ टैगोर, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सुभद्राकुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', मुंशी प्रेमचंद, डा. हरिवंश राय बच्चन जैसे कवि/लेखकों से हमारा हिंदी साहित्य अत्यंत समृद्ध हुआ है। महादेवी जी का चित्रण देखिए-

दर्द ढला जब छंद में, गया कलेजा चीर।
मीरा थी वो आज की, गायी मन से पीर।।

गणित/विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी व्यक्तित्व रहे हैं- डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम, श्रीनिवास रामानुजन, डॉ. सी.वी रमन, जगदीश चंद्र वसु, हरगोबिंद सिंह खुराना, कल्पना चावला। कल्पना चावला के लिए दोहा प्रस्तुत है-

पढ़-लिख वैज्ञानिक बनी, भरने लगी उड़ान।
भारत-अमरीकी सदा, करते खूब गुमान।।

मेजर ध्यानचंद ने हॉकी के खेल में भारत को विशेष पहचान दिलवायी। उनके विषय में एक दोहा देखिए-

हॉकी में भारत बना, जग का था सिरमौर।
स्वर्ण पदक लाया सदा, ध्यानचंद का दौर।।

कृति की भाषा-शैली सरल, सरस एवं बोधगम्य है। कृति में समाहित सभी महान व्यक्तियों के आविर्भाव एवं अवसान की तिथियाँ भी अंकित की गयीं हैं। बच्चे ऐसी ज्ञानदायिनी कृति का रसास्वादन करके जीवन को सार्थक कर सकेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। कवि सत्यवीर नाहड़िया बधाई के पात्र हैं। शुभकामनाओं सहित-

8 मई, 2020

-डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
(हिंदी अकादमी दिल्ली से सम्मानित)
785/8, अशोक विहार,
गुरुग्राम-122006 (हरियाणा)
संपर्क सूत्रः 9210456666

जिनके दम से इतिहास सुनहरा है...

इतिहास क्या होता है? क्या युद्धों का अभिलेख ही इतिहास कहलाता है? नया इतिहास कैसे रचा जाता है? क्या नया इतिहास दूसरों का रक्त बहाकर रचा जाता है? इतिहास पुरुष कौन होते हैं? क्या धरती के विशाल खण्डों पर शासन करने वाले इतिहास पुरुष होते हैं? निश्चित रूप से नहीं। वास्तव में इतिहास मानव जाति के सुख-दुख और उत्थान-पतन का लेखा-जोखा है। नया इतिहास अपने रक्त का दान करने से रचा जाता है। इतिहास पुरुष वे होते हैं, जो लोगों के दिलों पर शासन करते हैं। राम और कृष्ण इसलिए नहीं पूजे जाते कि उन्होंने रावण और कंस का वध किया था, अपितु इसलिए पूजे जाते हैं कि उन्होंने धर्म के मार्ग पर चलते हुए कर्म करने का उदाहरण प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानंद ने धर्म का वास्तविक अर्थ बताया तो अब्दुल कलाम ने नयी वैज्ञानिक दृष्टि दी। भगतसिंह ने देश के लिए प्राण न्योछावर कर दिए तो ज्योतिबा फूले ने शोषित वर्ग के उत्थान के लिए आवाज़ उठाई। कबीर ने अपनी लेखनी से आडम्बर पर प्रहार किया तो प्रेमचंद ने आम आदमी के दर्द को उकेरा। यही हैं वे इतिहास पुरुष जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में समाज के लिए कुछ नया करके दिखाया।

इतिहास को रचना और इतिहास को लिखना दो अलग-अलग बातें हैं। इतिहास लिखने के लिए भी एक स्वस्थ दृष्टिकोण का होना अनिवार्य है। रुढ़िवादी इतिहासकार तो सिकंदर को भी महान कहते रहे। कई विदेशी आक्रांता अपने

साथ इतिहास लिखने वाले लेकर आए। उन्होंने तो अपने स्वामियों को नायक के रूप में चित्रित करना ही था, लेकिन आज संपूर्ण इतिहास को एक नये दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। विशेष रूप से हमारे साहित्यकार तटस्थ होकर ऐसे इतिहास पुरुषों को चिह्नित कर रहे हैं और अपनी रचनाओं से नयी पीढ़ी का ज्ञानवर्धन कर रहे हैं। ऐसे ही एक प्रतिभावान कवि हैं सत्यवीर नाहड़िया जिन्होंने नया इतिहास रचने वाली महान विभूतियों को कविताओं के रूप में चित्रित किया है। दोहा छंद में लिखी गयीं ये सभी कविताएँ बच्चों को ध्यान में रखते हुए सरल और सहज शब्दावली लिए हुए हैं। इससे पहली उनकी करीब एक दर्जन कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। पत्र-पत्रिकाओं में तो उनके स्तंभ और शोधपरक लेख नियमित रूप से देखने को मिलते ही हैं। लगता है सत्यवीर नाहड़िया, जी भी कोई नया इतिहास रचने वाले हैं।

-विपिन सुनेजा 'शायक़'

28 अप्रैल, 2020

(गायक-कवि)

24, सिविल लाइन्स,

कृष्णा नगर, रेवाड़ी, (हरियाणा)

संपर्क सूत्र : 9991110222

इतिहास रचने वाले साधक

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में महापुरुषों का जीवनवृत्त हमें अनूठी प्रेरणा देता है। स्वतंत्रता-संग्राम, साहित्य, कला, विज्ञान, खेल तथा संस्कृति के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी साधना के बूते पर विशिष्ट पहचान बनाने वाले साधकों के बहुमुखी योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इन महापुरुषों की लंबी जीवनी का सारांश इस दोहावली में इस उद्देश्य के साथ कलमबद्ध करने का प्रयास किया है कि नन्हे-मुन्ने बच्चों को खेल-खेल में उन्हें याद करने का अवसर मिले तथा वे उनसे प्रेरित एवं प्रोत्साहित हो सकें।

हिंदी साहित्य में आधी सदी से लेखनरत रहकर शताधिक कृतियाँ दे चुके जाने-माने बाल साहित्यकार डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी वरिष्ठ रचनाकार श्री विपिन सुनेजा का मैं कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने न केवल भूमिका के रूप में इस रचनाधर्मिता को सराहा, अपितु अपने अमूल्य सुझावों एवं मार्गदर्शन से उपकार भी किया है। प्रकाशन की दुनिया में एक नयी लीक डालने वाले समदर्शी प्रकाशक, मेरठ के साहित्य साधक योगेश समदर्शी का बात के धनी होने के लिए विशेष आभार।

इतिहास रचने वाले इन साधकों के चयन में मेरी यह सहधर्मिणी श्रीमती गीता तथा तकनीकी सहयोग में बेटे सत्यगीत व बिटिया आस्था का योगदान प्रेरक रहा। माता-पिता, परिजनों, शुभचिंतकों, मित्रमंडली के शुभाशीष एवं शुभकामनाओं को कैसे भुलाया जा सकता है? बहुआयामी इतिहास रचने वाले ये साधक-हमारी प्रेरणा बनें...ऐसी आशा है।

-सत्यवीर नाहड़िया

26 अप्रैल, 2020

योगेश्वर श्रीकृष्ण

(भाद्रपद कृष्ण अष्टमी)

खास कला सोलह निपुण, दिव्य एक अवतार।
योगी सबसे वे बड़े, जग के पालनहार।।

माता जिनकी देवकी, मात यशोदा साथ।
वासुदेव जी थे पिता, शीश नंद का हाथ।।

उनके रूप अनूप हैं, उनके नाम हजार।
अर्जुन के बन सारथी, भव से करते पार।।

किशन-कन्हैया श्याम जी, वासुदेव गोपाल।
लीला खास कमाल की, जीवजगत की ढाल।।

विचलित जब अर्जुन हुए, दिल से निकली आह।
गोबिंद के उस गीत ने, खूब दिखायी राह।।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

(चैत्र शुक्ल नवमी)

मर्यादा के रूप वे, घट-घट में है नाम।
पुरुषोत्तम मर्याद के, कण-कण में हैं राम।।

वे रघुकुल की रीत के, बने मान-सम्मान।
सदा निभाया था वचन, सदा निभायी आन।।

रहे विष्णु अवतार वे, रघुकुल की पहचान।
नवमी आयी चैत की, आए खुद भगवान।।

आज्ञाकारी पूत थे, किए न पिता निराश।
चौदह वर्षों का लिया, हँसकर था वनवास।।

जनहित में ऐसे किए, अलग अनूठे काज।
मुहावरा है बन गया, 'रामराज' यह आज।।

महर्षि वाल्मीकि

(आश्विन पूर्णिमा)

माह खास था सातवाँ, आन-बान सम्मान।
पूर्णिमा आसौज की, जन्मे खुद भगवान।।

न्यारे पहले वे हुए, कविवर सबसे खास।
रामायण लिखकर रचा, एक नया इतिहास।।

'मा निषाद' की आह से, पीर पराई धार।
पीड़ा से कविता हुई, रचा नया संसार।।

तीन काल थे देखते, ज्योतिष के विद्वान।
रामायण रचकर दिया, जीव-जगत को ज्ञान।।

रत्नाकर डाकू हुए, पा नारद से ज्ञान।
रामायण के रचयिता, वाल्मीकि भगवान।।

भगवान परशुराम

(वैशाख शुक्ल तृतीया)

द्रोण-भीष्म से चेलके, साथ कर्ण-सा वीर।
परशुराम जी गुर दिए, चलवाये थे तीर।।

रहे विष्णु अवतार थे, परशुराम भगवान।
त्रेता युग की बात है, युद्धों की पहचान।।

फरसा उनका जब चला, किया दुष्ट संहार।
इक्कीस बार जग किया, राक्षसों से पार।।

छंदबद्ध कर दे गए, खास नए संदेश।
धरती तक थी कांपती, आता जब आवेश।।

आओ भगवन आज फिर, फरसा लेकर हाथ।
रक्षक ही भक्षक बने, समझाओ हे नाथ।।

❍❍

संत रविदास

(माघ पूर्णिमा, संवत् 1433–संवत् 1540)

कोय कहे रविदास रे, कोय कहे रैदास।
माघ सुदी पंद्रास को, संत हुए वे खास।।

मन को वश में राखिए, कहते हैं रैदास।
मन हो चंगा तो सदा, गंगा रहती पास।।

ऊँच-नीच को छोड़िए, सब जग एक समान।
सबका मालिक एक है, कण-कण में भगवान।।

न्यारे दोहे गूँजते, शब्द-शब्द नव आस।
न्यारी उनकी बाणियाँ, जन-मन का विश्वास।।

नमन आपको जग करे, धन्य-धन्य रविदास।
जीव-जगत की आस वे, जन-मन के विश्वास।।

○○

गुरु नानकदेव

(कार्तिक पूर्णिमा, संवत् 1526-संवत् 1596)

सिक्ख धर्म की आन वे, सिक्ख पंथ की शान।
बाबा नानक देव जी, मानवता के मान।।

पूरे जग में घूमकर, खूब निभायी आन।
पहले गुरुवर नानका, दिया जगत को ज्ञान।।

ननकाना साहेब चल, आता जगत तमाम।
पुजता है करतारपुर, तीरथ पावन धाम।।

नानक दुखिया कह दिया, सारा ये संसार।
उनके वचनों में छिपा, जीव-जगत का सार।।

सारी खास उदासियाँ, भाषा बहता नीर।
न्यारी उनकी बाणियाँ, सूफी कवि की पीर।।

भगवान महावीर स्वामी

(चैत्र शुक्ल त्रयोदशी)

त्याग और संयम सिखा, बदल दिया परिवेश।
सत्य अहिंसा का दिया, एक अमर संदेश।।

जैन धर्म की आन थे, मानवता के मान।
भारत-माँ की शान वे, दुनिया में पहचान।।

अति संचय दुख खान है, करना सीखो दान।
असली सुख मन को मिले, महावीर का ज्ञान।।

क्षमा कहें मन से सदा, क्षमा करे इंसान।
वर्धमान के ज्ञान से, मिला क्षमा को मान।।

नफ़रत का माहौल है, चहुँदिश फैली पीर।
फिर से आओ देश में, हे देव महावीर।।

❍❍

महात्मा बुद्ध

(563 ई.पू.–483 ई.पू.)

गौतम वे सिद्धार्थ थे, शुद्धोधन के लाल।
राजा कुल के ठाठ थे, सुविधाओं के ताल।।

देख बुढ़ापा रो पड़े, विचलित लख बीमार।
अर्थी देखी तो पता, चला जगत निस्सार।।

संन्यासी फिर देख के, ऐसे हुए निहाल।
यशोधरा के साथ ही, छोड़ दिया वो लाल।।

राजपाट को त्याग के, न्यारी पकड़ी राह।
माया सारी छोड़कर, त्यागी भौतिक चाह।।

जप-तप न्यारी साधना, वैरागी पा ढ़ंग।
ज्ञान हुआ तो कह दिया, अपनाओ नवरंग।।

पूरा पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।